16734

श्रीरामचन्द्राय नमः ।

सियाराघवहोलीबिलास ।

श्रीमन्महिमहेन्द्रयावदार्य्यकुलकमल-
दिवाकर श्रीमन्महाराजाधिराज श्री-
सवाईमहेन्द्रमहाराजसरप्रतापसिंह
बहादुर जू देव सरामदराजहाय
बुन्देलखण्ड जी. सी. आई. ई.
ओड़छाधीश की आज्ञानुसार

श्रीअवधवासी श्रीसीतारामाश्रित श्रीसीतारामशरण
रसरंगमणिजी विरचितं ।

काशी ।
भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १९०० ई० ।

[stamp]

प्रथम बार ५००

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

श्रीसियाराघवहोलीबिलास।

शुद्धाशुद्धपत्रम्।

16734

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१५	सौजसु	सौंज सु जोरी
२	२	मानौ	मानहुं
२	८	लग	लगि
२	११	बतानैं	बताने
२	१२	खजानैं	खजाने
३	८	मानो लिषि बांधे	बांधे मनो लिखि
३	११-१२	जिनके रसरंग मनी सु वितान बने हैं,	फेरवा जिन सो रसरंगमनी सु बने हैं,
४	१५	गुलाब कली	कलाब लगी
५	१०	जड़ाऊ	जड़ाउ
५	११	अरवेंदा	यों अखेदा
६	४	परै यौ	परैं पै
६	१२	मैनद	मै नद

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	१४	मुगडन	घुगिडन
६	१५	कौनहि लागत	कै तनिकौनहिं
६	१६	पुहै	पुहे
७	३	डाँढ़ी	डांड़ी
७	१०	सुंदर	सुंदरि
७	१६	बखान	बखानि
८	२	जान	जानि
८	३	पान	पानि
८	५	श्रान	श्रानि
८	८	बिचार	विचारि
८	९	रघुवीर	लघुवीर
८	१०	ध्यायतु	ध्यावत
८	११	मत	मति
८	१३	श्रहौ	श्रहौं
८	१४	जु की	जु को
९	३	श्रायसु	श्राप सु
९	९	रोके हरोसित	रोकेहुँरोसित
९	११	कपूर के	के धूर के
९	१४	सीस	सीसे

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०	२	नभगोरन	न भगोरन
१०	१४	तैसींह	तैसहिं
११	४	ओलि	ओल
११	८	सब	तिहु
१२	७	श्यामलसे	श्यामल से
१२	१०	चवाव	चवात
१३	१०	कहौ	कह्यो
१३	१८	उपगंन	उपंगन
१४	७	दारा	छरा
१५	१२	परै	परे
१७	८-९	घेर मै आए सजीत भई अवरी,	गोल के घेर में आए सुजीत भई,
१७	१०	चाट	चोंट
१८	७	डारौं लड़ैंती	डारो लड़ैती
१८	९	कोटन	कोटिन
१८	१३	हमको यों कहा	हम काहे को यों
२०	५	हैं तिल केरि	है तिल कारे

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०	१४	नाथ	साथ
२१	६	मणिकामदेन्द्र	श्रीकामदेन्द्र
२१	२०	सरजू	सरजु
२२	१८	वल्लव	पल्लव
२४	५	लरकारी	ललकारी
२४	१५	मरीभिरेरति	धारीभिरेराते
२५	३	कारकै	करिकै
२५	१५	हरषति	हरषत
२६	७	पगै	पगे
२६	१६	कट	कटि
२७	१	सभूमि	सुभूमि
२७	५	वलैया	कलैया
२७	६	जागे	पागे
२७	७	ओरी	बोरी

श्रीसीतारामाभ्यां नमः ।

श्रीगुरवे नमः ।

श्रीसियाराघवहोलीबिलास ।

सवैया ।

फागुन भागन आय चढ्यो अनुराग बढ्यो सखियान हियोरी । लाल लली सँग मैं अब खेलब फाग हमू मिल के रस-बोरी ॥ लालन लालन केरि जरी पिचकारि सुरंगभरी बरजोरी । छोड़त भे रसरंगमनी छबि सो हँस हेरि सिया उर ओरी ॥ १ ॥

ताहि समै बिमला दुरि दौरि सु केसरि घोरि पिया सिर ढोरी । कै उठी होहोहो होरी सखी हिल कैं मिल कै नव बैस किसोरी ॥ ठाढ़ भये रसरङ्गमनी बिलगाय दोऊ दल सौ जसु जोरी । खेलत कौसलराजलला मिथिलेशकिशोरी भरे मुद होरी ॥ २ ॥

लीन्हे सखा सँग सोदर श्रीरघुवीर बिराजत श्याम शरीर हैं। मानौ मैन महीपति साथ में सोहत जोसभरे भट भीर हैं ॥ केसरि पेंच बिराजत हैं जरतार सु तुर्रा झुलैं लर हीर हैं। राजति हैं तिन पै रसरङ्गमनी सिरपेंच प्रभा उमगी रहैं ॥ ३ ॥

एकन के सिर सोहत पाग मुकेस की बांकी रहीं लग कानैं। छाजि रहीं झुकि कै कलगीं तिन पै अति बेश न जाहि बखानैं ॥ येकन के बर सीस सुदेश बिराजत हैं पुनि पीत बतानैं। मानो मनोज महीपति के रसरङ्गमनी खुले खास खजानैं ॥ ४ ॥

एकन के कुलही सिर कञ्चन की लसती ससि की दुतिहारी। येकन सीस में पाग प्रसूनन की बसती बनिता बसकारी ॥ येकन के झिलमैं सम रेसम जारी सु जोहत मोहत प्यारी। नैन गुलाल बचावन की रसरङ्गमनी सु ठनी हुसियारी ॥ ५ ॥

येकन के कलकुण्डल डोलत काननमैं मन लेत सु लूटी । खात बिरी यक ठाढ़े अनङ्ग की सान में आनन आनँद जूटी ॥ येकन के जुलफैं घुँघुरारि फबैं भल गोल कपोलन छूटी । हैं रसरङ्गमनी हर के गिर पै जनु सम्बुल की बर बूटी ॥ ६ ॥

येकन के नकसा बने अङ्गद हेम के बाहुन मोल घने हैं । मानो लिख बांधे जन्त्र सदा सुख छेम के छायक ये अपने हैं ॥ झीने झगा तन राम सखान के सोहत सुन्दर सौंध सने हैं । कोरि किनारिन के जिनके रसरङ्ग-मनी सु बितान बने हैं ॥ ७ ॥

केसर सो दुपटा रँगि रूप छिपाये सखा निरखैं छबि लाल की । तारजरी दुहु छोरन छैलन लाये लरैं मुकतामणि जाल की ॥ कञ्चन के पिचका कर कञ्ज लिये कटि फेंट फबै सु गुलाल की । रङ्गन की गरमी उर में रसरङ्गमनी गरमी तन साल की ॥ ८ ॥

ऐसे सुबन्धु सखान के बीच बिराजे ल-
जावत काम करोरैं । हेरि रहे सब के दिसि
में मुसक्याय सु राजिवलोचन कोरैं ॥ को
बरनै छबि सुन्दर कोशल राजकिशोर की
जोर अथोरैं । जाकी कटाक्ष बिलास मनी-
रसरङ्गप्रिया सिय को चित चोरैं ॥ ९ ॥

सोहहिं स्वामिनि सीय सु सङ्ग सहेली सबै
अलबेली नवेली । गौरि गिरा कहिये जिन
आगे गवेली लगैं रति मानहुँ चेली ॥ सारी
सबै जरतारी किनारिन की पहिरें तन रङ्ग
रँगेली । पीरी हरी रसरङ्गमनी कुसुमी सित
ऊदी औ नीली रमेली ॥ १० ॥

येकन के सिर में अति सोहैं मनीन जराव
सराव सरी है । मोतिन सो रची येकन माँग
अदाग गुलाबकली सु जरी है ॥ मालति
की कलिका रसरङ्गमणी तिमि येकन माँग
भरी है । मैन की ढाल पै मैनहिं की जनु
रूपे मढ़ी छुरी साँग धरी है ॥ ११ ॥

फूलन सो गुही बेनी सु येकन पीठ लसै उपमा यों उदार है। मानो दुरङ्ग भुजङ्ग गिरा जलमाहिँ बसै सोरसै भो सिँगार है ॥ येकन के सिर छूटे बिराजत बार सखीन के सुन्दर प्यार है। स्याम बड़े चिकने घुँघुरे रसरङ्गमणी सुकुमार अपार हैं ॥ १२ ॥

येकन के सित चन्दन खौरिन बीच बिराजत रोरी के बँदा । गङ्ग के भौँर परे ज्यौँ अनङ्ग के खेलनवारे गुलाब के गेंदा ॥ येक सखी के ललाट जड़ाऊ की आड़ अहै उपमा अरबेंदा । सीस चढ़ी रसरङ्गमणी हिय तेँ सिय जैति की चाड़ उमेंदा ॥१३॥

एकन आलिन के भृकुटीबर सोहाति श्याम सलौना डिठौना। डीठ डरावन हेतु अहैं जनु ए छवि छावन रीछ के छौना॥नैन निरञ्जन एकन के उपमा यों लहे रसराज के भौना। गर्व भरे भट मानो गहे रसरंगमणी कर अस्त्रन कौना ॥ १४ ॥

एकन के दृग अञ्जनरञ्जित खञ्जन गञ्जन राजत लोल हैं। लीन्हें मनो निसि ते तुम पङ्कज दै निज पीत पराग को ओल हैं॥ लाल जड़े श्रुति भूषन ते न कहे परै यौ उपमा इमि तोल हैं। मैन महीप सभा रसरङ्ग मणी दोऊ दीप बरैं ज्यों अमोल हैं ॥१५॥

एकन के नकबेसर मोर सोहावन सो उपमा-कछु दीव है। जो सुर-रूख की डार मयूर लसै तबहूं लखि लाजै अतीव है॥ एकन के लर मोतिन की बर आनन अस्तन बीच सुग्रीव है। चन्द्र-सराज सुदेस मनो रसरङ्गमणी मधि मैनद सीव है॥ १६॥

रङ्ग-रँगी तन तासु की कंचुकि चारु बनी सु घनी चटकील है। राजति हैं जरि मुण्डन फुंदिन सौतानि कौ नहिं लागत ढील है॥ कञ्चन के भुजबन्द सखीन भुजान सु भ्राजैं पुहै पट नील है। आये मनो शिव पै रसरङ्गमणी दिन रैन सु मैन उकील है॥ १७॥

नीवी मढ़ी जरिता सु रुमावलि सङ्गिनि सो उपमा निरधारे। मानहु हेम की बङ्गिन में असतूस की डाँढ़ी अनङ्ग सँवारे॥ लीलक के लहँगा कटि में अति सोहैं सखीन के घूम घुमारे। नेवर नूपुर की रसरङ्गमणी मधुरी धुनि होत अपारे ॥ १८ ॥

ऐसी सखी चहुँओर लसैं सिय मध्य कृपा रस सागर बोरी। दै सब कों मुद पुञ्ज बिलोकहि मंजुल कञ्ज बिलोचन कोरी ॥ को बरनैं छबि सुन्दर राजकिशोरी की जो तिहुँ लोक अँजोरी। जासु कटाक्ष बिलास पिया चित को रसरङ्गमणी लियो चोरी ॥ १९ ॥

श्रीरघुलाल कह्यो रिपुसूदन सों अतिसै मधुरे मुसक्याय कै। तात प्रिया पहँ जाउ सो आपनी बाँह अली एक आनो बुलाय कै॥ तासों कछू हम भेद की बात बखानहैं भाँति भली समुझाय कै। जानिहै तो रसरङ्गमणी मनिहै विधि बोल विशेषि सुभाय कै॥२०॥

नीकी कही तुम नाथ कहो पर मैं केहिं बाँह में ह्वै हित जान है। जाउँ बुलाउन ताहि कहौं प्रभु सो गाहि के पदपङ्कज पान है॥ कोउ न घेरै तुम्हैं कहियो रसरङ्गमणी रघुबीर की आन है। है यह मंत्र सखा ज्यों सही निज पै उत मानैं जो रावरी कानि है॥२१॥

आयसु मानि गयेही बनैं कहियोही सु बैन चलै सिय तीर हैं। लीन्हे सु मन्त्र बिचार भले सु विचक्षण लच्छण के रघुबीर हैं॥ आवत स्वामिनि के पद ध्यायतु श्रीरिपुसूदन जू मतधीर है। धाईं धरै उत तें त्यों सखी रसरङ्गमणी करिके बहु भीर है॥ २२॥

बोले बिलोकि अहौ प्रभु को लघु सोदर पै उर की सुन लीजै। जानि सिया जु की दास पदाम्बुज को अलि खास अभै मोहि दीजै॥ आइये लाल चले इत में चित में हमरी मति सङ्क करीजै। जौ मिथलेश-किशोरी के दास बने रसरङ्गमणी तुम्हरी जै॥

काज कहा वेइ जाने तऊ कछु जानिये सो तो सुनाइये खोली । हवै है न सन्धि की बात जु जाय बखानिये आयसु आपनी टोली॥ आयों बुलावन कों इत एक सखी उत मैं पठयो प्रभु बोली । सांचिहु सांच कहौं रस रङ्गमणी मन में जनि जानो ठठोली ॥२४॥

लाल गुलाल के ढेर लला जु बिलोकहु नैन नजीकहु दूर के। पीछे हमै रङ्गभूमि में आनि कै रोके हरोसित सङ्ग हजूर के॥ देखो डला कितने हैं भला भरपूर धरे कर पूर कपूर के। ढेर अकाश लगे रसरङ्गमणी लखि लेहु मृगामद चूर के ॥ २५ ॥

कौन गनै घट केते हैं रंग सहाब के चाव चितै कै लचाइये । सीस असंख्य भरे धरे वारि गुलाब निहारि कै आव बचाइये ॥ फूलन की छड़ी छोटी बड़ी बहु गेंदन भेद कहां लो गनाइये। देखत हो तुमही रसरङ्ग मणी नहिं बात वृथा सो बनाइये ॥ २६ ॥

बेला चमेली फुलेल को है गनना कहा जो नभ गोरन ते जू । देखत हों घरी एक मै खात हहा तुमही कर जोरन ते जू ॥ चोवन के चुरवा चलि हैं चहुंओरन ते झक-झोरन ते जू । घावरे ह्वै पग छ्वै हौ लला रसरंगमणी दृग कोरन ते जू ॥ २७ ॥

ए कर बाँधन को धरी फूल की माल त्रिया तन की सब सौजें । आज हमारेहिं हाथ लला जू के गाल अहैं मिजवैं भर मौजें ॥ केसर रंग भरे रसरंगमणी लखिये बहु हेम की हौजें। कञ्चन के पिचका कर कञ्ज लिये ललना खड़ी फौज की फौजें ॥ २८ ॥

लाल उतै पिचका कर कञ्ज लिये पट दामन लौटे छबील हैं । तैसींह संग में छैल छबीले सबै कुँवरोटा यकोटे हठील हैं ॥ लाड़िली जू के इतै सु चितै चख लीजिये नेकहुं नाहिं न ढील हैं । लागी अनी पै लला रसरंगमणी जू कहा करनो अब सील हैं।

एक कहै कर जोरि सखी सुन लीजिये श्रीमिथिलेशलली जू । कौन घटाई अहै इत केरि गये रघुनन्दन पास अली जू ॥ एक कहैं धारि राखो लला जू को ओलि में मानि सलाह भली जू। ऐहै अली तब जैहैं चले रसरंगमणी अपनी सु गली जू ॥३०॥

सो सुनि कै बिमला सखि बैन कहैं यह बात हँसी सब लोक में। दूत ह्वै आये सँदेस कहैं तिनको केहि कारण राखिये रोक में॥ श्रीमिथिलेशकिशोरी जु ताहि सराहि कृपा दृग कोर विलोक में। बीरी दई तिन लीन्हीं सिया पद छ्वाय मणीरसरंग बिसोक में॥

हे बिमला मति की बिमला करिये मुख पै केहि भांति बड़ाई। है यह काज तुम्हारेहि लायक नायक सोदर संग मैं जाई॥ आरज-नन्दन आनन्दकन्द की बात बिनै सुन के सुख छाई। दै रसरंगमणी बर उत्तर आय कहौ सब हाल सुनाई ॥ ३२ ॥

आयसु सीस सो यों कह सीस नवाय चली मन मोद महा हैं । खात अली रिपुसाल दोऊ लालि पान सु ह्वै मुख लाल रहा हैं ॥ बन्दि सियापद शत्रुनिकन्दन संग लै ताहि गये सु तहां हैं । श्री दस स्यन्दननन्दन सानुज राजें मणीरसरंग जहां हैं ॥ ३३ ॥

राम लसे घनश्याम लसे सुखमा जल से उमड़ान सखान मैं । आनँद बुंद झरी कर हीं रसरंगमणी मधुरी मुसक्यान मैं ॥ लोल कपोल चवाव तमोल भरे उर ऐड़ बड़ी एक सान मैं । बोले सचैन सखी सन बैंन मरोरत नैन गसीले गुमान मैं ॥ ३४ ॥

दासी हमें मिथिलेश जु दाइज माहिं तुम्हें सब काहिं दई जू । कौन सी चूक हमारि निहारि बिहाय प्रिया जी की ओर भई जू ॥ बेद बिचार को त्रासन जो इत ऐहो नहीं तो अनीत छई जू । हानि गलानि न ह्वैहै कछू सुख पैहो मणीरसरंगमई जू ॥ ३५ ॥

लाल कहौ रसरङ्गमणी अब वेद की रीत कहां जु रही है । प्रीतम प्यारी सकेलि कै फौज लरैं यह वेद कहां सु कही है ॥ हार औ जीत की बात सु तो प्रभु रङ्ग जु नाथ के हाथ सही है। देखिये कौन के साथ रहैं दल का पै दया उनकी उमही है ॥ ३६ ॥

लालन और कछू कहो सो सुनै रावरि बानी त्रिभेद की सागरी । बात यहै बर नीकी बनै सोइ कीजियो कीरति लोक उजागरी ॥ जाय कहौ रसरङ्गमणी सिय सो पिय भेद के बैन सो नागरी । ताहि सराहि दई पदवी बिमला अतिसै अमलामति आगरी ॥

भाँति भली सो सिया तेहिं काहिं कृपा रस सागर मैं दियो बोरी। हाँकि उठे दोउ टोल कहैं सुख छाँकि अहै हो हो होरी हो होरी ॥ बाजि उठे रसरङ्गमणी डफ ढोलक और मजीर की जोरी । होन लगी धुनि झाँझ मृदंग नफीर उपगंन की दुहुं ओरी ॥

श्रीदसस्यन्दननन्दन जै रघुनन्दन जै उत
जोर सो जागी। जै मिथिलेशकिशोरी की
जै निमिबंशकिशोरी इतै धुनि लागी॥ हा-
थन के हथना लै प्रसून के गोला गहे सु
गुमान में पागी। मोरँ दुहूं दिसि तें पिय
प्यारी की बोलहिं जै रसरङ्ग सुरागी॥३९॥

बीरी दारा भरि कैं परि पत्तन पै ढरिये
कै बिचक्षन डारहीं। एकहिं एक सराहि
उछाह न बोलिकै बारहिं बार प्रचारहीं॥
केसरि बारि भरी पिचकारिन मालति की
कलिका मुख धारहीं। मोद उमङ्गन सो रस
रङ्गमणी दोउ ओर अनी दोउ मारहीं॥४०॥

एक कहैं अब क्यों लाग ढील लगाइये जु
सुनिये सब कान दै। लाल गुलाल के ओट
छरी मिलि जाइये जू भर कै उर आनदै॥
लाल किये रसरङ्गमणी उत आगे सखागन
आपन शान दै। प्यारी इतै अतिसै चित
चोपि चितै अलि-पुञ्ज चलायो है मान दै॥

लाल उतै बकसीस करैं अनमोल बड़े गजमोतिन माल की। प्यारी इतै बकसै नग हार हरा दुति-हारक जे ससि जाल की ॥ छूटैं दुहूँ दिसि ते रसरङ्गमणी बर मूठ अबीर गुलाल की। चोट बचावत है कर घूँघट ओट इतै उत मैं पटसाल की ॥ ४२ ॥

धुन्ध कपूर मृगामद चूर अबीर गुलाल की छाई अकाश मैं । सूर सकोचि दियो पट अन्तर मानो सिया रघुलाल-बिलास मैं ॥ लाल सखा रसरङ्गमणी अँटक्यो एक लाड़िली टोल सु खास मैं । प्यारी की एक सखी अटकी पिय-गोल मै दोउ परै रस हाँस मैं ॥ ४३ ॥

लाल उतै नर-भूषन वस्त्र बनाय कै वाहि विनोद मचावहीं । दै त्रिय की छबि प्यारी जु याहि नई दुलही कहिकै सु नचावहीं ॥ याहि सखा रघुनन्दन जै जगवन्दन जै कहिबौ सिखरावहीं । जै मिथिलेशकिशोरी की त्यों इत मैं रसरङ्गमणी की पढ़ावहीं ॥४४॥

पाट बँधी पचरङ्ग प्रसूनन की छरी छैल छबीली लिये हैं । आय मिली दोउ फौज हरौलन ह्वै परी जङ्ग उमङ्ग हिये हैं॥ एकन एकहिं मारि प्रचारि अनेकन व्यङ्ग की गारि दिये हैं । मानौं लरैं रसरङ्गमणी मनजात रती बहु रूप किये हैं ॥ ४५ ॥

पाग के पेंच छुटे सिर ते पग आये सखान के यों छबि छाये। भीरु परे विधु मानो सरोजन को किरणी पठवाय मनाये॥ मोती लरैं छुटीं सीस ते आईं उरोज सखीन के सो उपमाये । सङ्कट में शिव पै जल छाड़ैं मनो रसरङ्गमणी जलजाये॥ ४६ ॥

पाय चलीं पिय को दल देखि सबै सखि सीय प्रताप बढ़ायो । ढीठ भईं धरि आगे सखागन लै चलीं औरन को गरिआयो ॥ ह्वैहैं खरे रसरङ्गमणी जिनके जिय में कछु खेल को दायो। सो न इहां ते टरेगो सही जन होइगो जो पितु एक को जायो॥४७॥

कौन सुनै सब के दृग मूँदे गुलाल बिहाल भगे अकुलाई। पीठ छरी उपटी मुख चाटन लाल भये सु प्रबाल की नाई ॥ पीछे परी जुबती दल देखि सखान की हार हिये में लजाई । लाल फिरे सो घिरे रसरङ्गमणी रमनी सिय सैन में आई ॥ ४८ ॥

एक सखी सिय सो हँसि बोलि सुनायो महा मन मोद भरी है। लाल हरौल के घर मै आये स जीत भई अबरी तुम्हरी है॥ सो सुनि कै धुन चाट बिजै के नगारन बारहिं बार परी है । लागी मुबारक होन निछावर की रसरङ्गमणी सु झरी है ॥ ४९ ॥

खासी खवासिन एक सिया की गई सु तहाँ हिय में हरखाई। साँवरौ छैल छबीलो परो अलि फन्द में मन्द जहाँ मुसक्याई ॥ लाल डरौ रसरङ्गमणी जिन देऊँगी चूक सबै बकसाई । श्रीमिथिलेशकिशोरी सो नीके मिलाय तुम्हैं पुनि लैहौं बलाई ॥ ५० ॥

बाँधे दोऊ कर लाल के लै कुसुमावलि भाग सोहाग उजागरी। डारि गरे पटुका सिय पास को लै चली पाग हिये अनुराग री॥ जे जुवती अति चञ्चल चारु सुलोचनि त्यों नव खेल की नागरी। बातें बनाय कहैं सिगरी रसरङ्गमणी रस रूप की आगरी॥

डारौं लड़ैती के पायन में चलि कै रसरङ्गमणी सुखऐन को। वारिये या छबि ऊपर हेरि हिये हरषाय सु कोटन मैन को॥ एक कहैं हम आपन भायो कराय कै छाड़िहिंगी मुददैन को। खञ्जन गञ्जन नैनन अञ्जन लाइहैं लोचन लाहु सु लैन को॥

एक कहैं हमको यों कहा अबहीं पिय काहि वृथा डरवाइये। देखैं सिया जू कहा मरजी करैं सोई सबै मिलि कै करवाइये॥ एक कहैं रसरङ्गमणी त्रिय की छबि लाल को दै उर लाइये। पीछे लली के हुजूर मै हाजिर कीजिये मोद मनै उमगाइये॥ ५३॥

एक सखी दृग खञ्जन अञ्जन आँजि कियो अति रञ्जन प्यारो। तारी दई हँसि गाल गुलाल सो माड़ि भरी मन मोद अपारो॥ आयो सिया को सिंहासन लाल बिशाल सु हाथ उठाय जुहारो। भेट यहै रसरङ्गमणी तुम्हरी रमनी जय टेरि पुकारो॥ ५४॥

सोई कियो रसरङ्गमणी पिय प्यारी जु उत्तर यों सु दयो जू। लाल कहो तुम्हरो सो गरूर गुमान कहां यह काल गयो जू॥ सो सुनि छैल कह्यो मुसक्याय निछावर प्राण प्रिया पै भयो जू। जानि सिया रुख को विमला तब पानि को बन्धन छोरि लयो जू॥

बोली अली सुनिये अब लाल सिया जू के पायन जावक दीजै। बाँचै सो आपने भाल बिशाल मै हाल निहाल ह्वै भूषित कीजै॥ पीय कह्यो हम हारे सही हम हारे सही सबही सुन लीजै। दास सिया जू के हैं नित आज तिहारेहू रङ्गमनी रस पीजै॥

एकै कहैं हम बातन सो कबहूँ मनि हैं न लला चतुराइये। सूधे से श्याम न जानों बड़े छलखानि अहैं न इन्हैं पतिआइये ॥ पत्र सखा रसरङ्गमणी निज साखि देवाय सु आज लिखाइये। एक रती गुड़ हैं तिल केरि सिया बस में रहिवे को चवाइये॥५७॥

बोले सु प्रीतम जानि परै जिय साँच सोई कर लेहु अबै जू। एक कहा दश पत्र लिखाय कै लेहु तुम्हैं सब आज फबै जू॥ लाल उठाय विशाल भुजा हँसि टेरे सखा निज बन्धु सबै जू। आये सिया जु कि सौंह सखीन करी रसरङ्गमणी सु जबै जू ॥ ५८ ॥

सोई कह्यो सुखसिन्धु सुशील सनेह निंधान महारस मानी। बैठे सिंहासन नाथ सिया रुख जानि दियो गल में भुज रानी॥ को बरनै छबि राजकिशोर किशोरी की जो श्रुति नेति बखानी। जोरी अनूप बनी रसरङ्गमणी रतिनायक होरी की सानी ॥५९॥

नाचन लागे अलीगन गाय सु बाजैं मृदङ्ग मजीर सितारी । कोऊ न एक बचे जितने जग होरी के रङ्ग अहैं सुखकारी ॥ अंस धरे भुज प्रीति भरे दृग सो दृग देखत प्रीतम प्यारी । रूप सखी रसरङ्गमणी लखि कै तेहि औसर की बलिहारी ॥ ६० ॥

दोहा ।

जय श्रीसीताराम जय सरजू अवध सुधाम ।
जयतिरूपसखिजयतियुगपरिकररसिकललाम
जयजयजयगुरुदेवमणिकामदेन्द्रमणिनाम ।
गुञ्जा ते रसरङ्गमणि कारक करौं प्रणाम ॥२॥
रूप सखी के सु पदवर मणिलर अमल उदोत।
तिनके बिच रसरंगमणि बरण मिलायो पोत॥
मणि दुति दबी न संग तेहिं लगत काँचहू साँचि।
असगुनिसुनिसियरामरतरासिकधराहिंउरबाँचि

बरवै ।

इति श्री श्रीसियराघवहोलिबिलास ।
सरस सवैया साठिक पूरन खास ॥ १ ॥
सीताराम सरन रचि लिख्यो सुरास ।
अवध सरजूतट लछिमन किले निवास॥२॥

अथ युगलहोलीमयङ्ककला ।

दोहा ।

श्रीसीताराघव चरण वन्दि गुरुहिं सिर नाय ।
युगल फाग कछु उर फुरी रसिकन देउँ सुनाय॥

कवित्त घनाक्षरी ।

सिसिर के अन्त आयो ऋतु को महन्त भे रसाल बौरवन्त मत्त भ्रमर भ्रमन्त हैं । कोकिला नदन्त बात त्रिविध बहन्त रसरंग मणी सन्तराम प्रेम उमगन्त हैं ॥ अवध नितन्त नर नारि बिलसन्त पीत बसन लसन्त गावैं होरी हरषन्त हैं । महा मोदवन्त सखी सखा लै अनन्त आज सीता सीताकन्त मिलि खेलत बसन्त हैं ॥ १ ॥

तरुन तमाल तन कान्ति सीता पीतलता किंसुक से अंसुक अरुन बिलसन्त हैं । कलित कलंगी सीस ललित रसाल बौर भौंर भीर केस नैन कञ्ज बिकसन्त हैं ॥ नव-तरु बल्लव ज्यों कल कर पल्लव हैं भूषन सुमन बोल विहँग नदन्त हैं । त्रिविध समीर सुख

स्वास रसरंगमणी सोहैं सियाकन्त मानो सरस बसन्त हैं ॥ २ ॥

आली आज जात हुती चली सीय सेवा काज मिल्यो बीच छैल राज श्यामल शरीर री। औचकहीं आय मेरे दृगन समाय फेरि भरि गो गुलाल खोलि घूँघुट को चीर री॥ भई हौं बिहाल घनी पीर नहीं जात भनी लाल रसरंगमणी करिगो अधीर री। केते कुम्भ नीर लैके धोय धोय हारी तब कढ़ी है अबीर पै न कढ़े रघुबीर री॥ ३ ॥

नयो बर बाग नई चौक मध्यभाग नौ वितान जरि ताग तामें तनित उजाग है। गावैं नई राग नई सखी भूरि भाग जुरे रसरंग धाग नये सखा सानुराग है॥ नई सारी पाग नये भूषन विभाग धारे दम्पति अदाग नई सुखमा उमाग है। नई नई लाग उर नये जोश जाग सीताराम रस पाग नये खेलें नई फाग है॥ ४ ॥

साज को सँवारी सखी स्वर भरि भारी लागीं गावन धमारी राग मोद उद-गारी है। राम सखा भारी जानि होरी की तयारी रसरङ्गमणी तारी दै के चाञ्चरि उ-चारी हैं॥ लरे लरकारी डारैं रंग पिचकारी त्यों अबीर मूठ मारी कीन्हे अति अँधियारी है। भई जीत हारी दोउ दल के खेलारी मिले तन को बिसारी मुख जोहैं पिय प्यारी है॥ ५॥

जुगलबिहारी रुचि सब की निहारी रस रंगमणि धारी कल केलि अनुसारी हैं। लै लै पिचकारी दोउ नवल खेलारी मुख चन्दन पै मारी हँसै पागे दिलदारी हैं॥ भीजे पट-सारी किये दोऊ हुसियारी सो गुलाल मूठ मारी भिरे रति रसरारी हैं। मलि बलिहारी भे बिलास को पसारी खेलें होरी यों सुखारी राम पिया सिया प्यारी हैं॥ ६॥

खेलत इकन्त में बसन्त सियाकन्त

सिया सखी उभै सुखिया बिलोकै मोद भरि कै। लै लै कर कञ्जन मैं मंजुल गुलाल दोऊ मलत कपोलन मैं लोल केलि करकै॥ कहत छबीली छैल छाड़ोंगी नचाय कै न छूटिहौ रसीले रस फैल फन्द परिकै। धैकै रसरंग मणी जुगल जुगल गल कल हँसि हेरत हराय हियो हरिकै॥ ७॥

खेलैं रङ्ग होरी रसरङ्गमणी सीताराम अति अभिराम रति काम मद गारि गारि। दोऊ रसमाते दोऊ मोद उमगाते दोऊ मन्द मुसक्याते पिचकारी गात मारि मारि॥ दोऊ लपटान करैं अधरान पान दोऊ सु छवि छकान हेरैं कण्ठ भुज धारि धारि। दोऊ प्रीति मान जीत मीत सो अनीति जानि मन रस रीति सानि हरषाति हारि हारि॥ ८॥

इत्यष्टक सवैया।

पीत प्रमोद विपीनलता तरु पीत बितान बिछाइत डारी। पीत सखा सखि कीन्हें सिंगार सु पीत उभै सब सौंज सँवारी॥ त्यों रसरङ्गमणी सियराम धरे पट पीत विभूषन सारी। पीत बसन्त में पीत लसन्त परस्पर प्रीति पगे पीय प्यारी॥९॥

दोऊ दुहूँन पै केसरि वारि भरी पिचकारिन को भुकि भेलैं। दोऊ दुहूँन पै मूठ गुलाल की मंजुल मोदन सो मढ़ि मेलैं॥ दोऊ दुहूँ दिश ते भिलकै मिलिकै मनमानी करैं कल केलैं। रामासिया रसरङ्गमणी अनुराग सो फाग दोऊ खुलि खेलैं॥ १० ॥

आलिन सङ्ग मिली सिय जू पिय खेलत फाग तिन्हें नहिं चीन्ह्यो। पीछेहिं ते पकर्‍यो कट स्वामिनि दामिन ज्यों घन को गहि लीन्ह्यों॥ त्यों हँसि कै कछु व्यङ्ग भनी रस रङ्गमणी दृग अञ्जन दीन्ह्यो। मीड़ि गुलाल

कपोलन चूमि स भूमिसुता मन भावत कीन्ह्यो ॥ ११ ॥

लै दोउ दाहिन मूठि गुलाल भये सु कपोलन माँहि मलैया । देखि सु दूसरे हाथ दोऊ मुसक्याय गहे कर कञ्ज बलैया ॥ नैन सुनै न लगे न सरीर अबीर लगी रस जागे खेलैया । रूप रँगे रसरङ्गमणी अवधेशलला मिथिलेशललैया ॥ १२ ॥

जोबन जोर अनङ्ग अनन्द भरे जुरिगे दोउ फाग सु जङ्ग मै । लै पिचकारिन केसरि वारिन डारे दुहून पै दोऊ उमङ्ग मै ॥ अङ्गन पै पिचकारि लगी तिमि लागि गये दृगहू दृग सङ्ग मै । भींजि रहे रसरङ्गमणी सिय जू पिय जू रँग मैं रस रङ्ग मैं ॥ १३ ॥

वाजत हैं डफ ढोल मनो मेघवा नभ गाजत है चहुँओरी। नाचैं सखान नचाय सखी सुखमा त तेई मोरवा अरु मोरी ॥ रङ्ग भरी

बरषै घनश्याम दमङ्कहिं दामिनि भामिनि गोरी। होरी करी रसरङ्गमणी सियराघव जू बरषा ऋतु सो री ॥ १४ ॥

कौशललाल लला मिथिलापति छाडैं लगे भरि मूठ गुलाल की। मूठि चली रसरङ्गमणी नहिं डीठ चली दोउ नैन बिशाल की ॥ भूलि गई रङ्ग रोरी कि होरी भई सुख ओरी नई रस ख्याल की। ह्वै रही लालमई गति बाल की बाल मै बूड़ि रही मति लाल की॥

खेलि कै फैल सो फाग फँसे दोऊ फूलि रहे लहि नेह नबीलो। त्यों रसरङ्गमणी जुग अङ्ग कपोलन रङ्ग गुलाल फबीलो ॥ देखैं दोऊ गल बाँह दिये सुखमा सो कियो रति मैंन दबीलो। मो हिय मो निबसैं नित यों सिय जु रघुनन्दन छैल छबीलो ॥ १६ ॥

जानौं नहीं कविताई कछू न अहै रसिकाई को रञ्चक भासा । श्रीगुरु के करुना मति के अनुसार कियो जुग प्रीति प्रकासा ॥ सै

उनईस सतालिस पौष मैं श्रीसिरजूतट औध निवासा । सन्तन सङ्ग रच्यो रसरङ्गमणी सियराघव होलीबिलासा ॥ १७ ॥

छप्पै ।

तनसुतड़ितघनसरिसधरनघनतड़ितबरनपट ।
सिरनचान्द्रकामुकुटकपोलनकलितअलकलट॥
अमलकमलदलदृगनललकिछबिलखतपरस्पर
मन्दमन्दमुखहँसतलसतरसबशसियरघुबर ॥
दम्पतिअसनिबसैंसदारसरङ्गमणीजनकेमनैं ।
मोदितामिश्रीखायाजिमिमूकस्वादतामिकिमिभनै
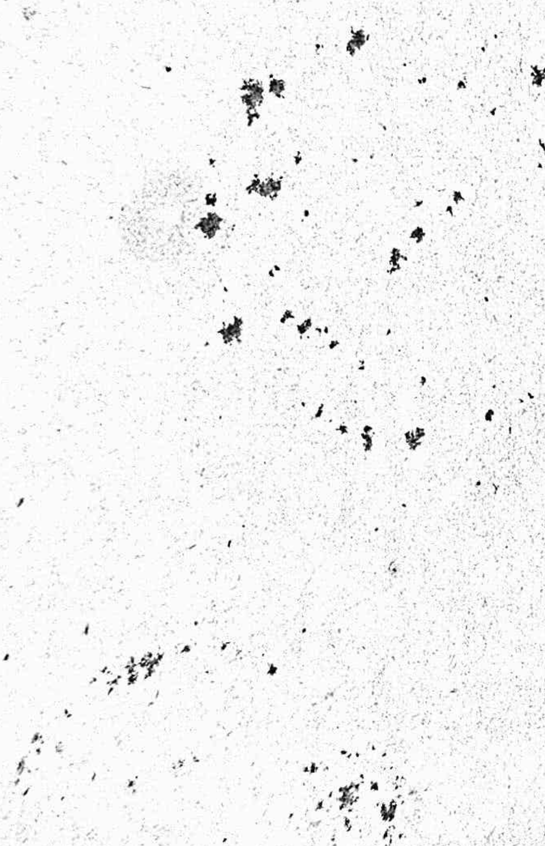
इति श्रीराघवेन्द्रसखासुहृद्श्रीकामदेन्द्रमणिचरणानुगहृदयोल्लासं श्रीसीताराघवहोलीविलासं समाप्तम् । शुभम् ।